ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

मेरी नजर में विनोबा और गांधीजी का ब्रम्हचर्य एक अध्ययन

According To Me, A Study of Vinba and Gandhiji

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

के.एच.वासनिक
सह प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शासकीय विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था, अमरावती,
महाराष्ट्र, भारत

शितल लक्ष्मण रोकड
अनुसंधानकर्ता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शासकीय विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था, अमरावती,
महाराष्ट्र, भारत

सारांश

भारत देश में समाज उत्थान में निरन्तर महनीय लोगों का योगदान रहा है। वैदिक काल में इनका समाज व्यवस्था को सुनियोजीत तथा सुव्यस्थित बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मध्यमाल के दौरान मनु ने उनके अनुसार समाज निर्माण की भूमिका को अदा किया। किन्तू मनु आज बहोत विवादास्पद है। कालांतर बाद भारत मे ऐसे संत महात्मा हो गये जिन्होने सुसंस्कृत समाज तथा सुव्यवस्थित शांत समाज निर्माण में अपना तमाम जीवन बिताया। ऊन महान महनीय व्यक्ती की विचारधारा का असर आज भी हम समाज में देखते है। आधुनिक भारत निर्माण में कई सामाजिक संतो का योगदान रहा है। जिनमें विनोबा और गांधी अग्रक्रम रखते है। इन महनीय व्यक्तिओं की समाज के प्रति ब्रम्हचर्य के विचारों को जानने का नम्र प्रयास यहाँ कर रहा हूँ।

India has been a contribution of significant people in the upliftment of society. During the Vedic period, there has been a significant contribution in making their social system sound and organized. According to Madhyamal, Ranu Manu played the role of building society according to him. But Manu is very controversial today. Later, there were such saints in India, who spent all their lives in building a cultured society and a well organized peace society. Wool, we still see the impact of the ideology of great personalities in society today. Modern India has contributed many social saints in construction. In which Vinba and Gandhi keep the forefront. I am making a humble attempt here to know the thoughts of these great people with regard to society.

मुख्य शब्द : ब्रम्हचर्य, अध्यात्मिक साधना, विनोबा के ब्रम्हचर्य संबंधी विचार
Brahmacharya, spiritual practice, Vinba's celibate thoughts

प्रस्तावना

विनोबा ने ब्रम्हचर्य को एक आधारभूत आध्यात्मिक तत्त्व माना है। विश्वचिंतन के संदर्भ में भारतीय ब्रम्हचर्य का विशिष्ट महत्त्व है। इसकी परिभाषा करते हुए विनोबा कहते है, ब्रम्हचर्य शब्द का तात्पर्य है, मनुष्यद्वारा ब्रम्ह की खोज मे अपना जीवनक्रम रखना। ब्रम्हचर्य में हमारे सामने कोई अभावात्मक बात नही, भावात्मक बात रखी जाती है।१ उसमें किसी खास चीज से परहेज हो इतना ही नही बल्कि एक बात प्रत्यक्ष करने की है उसी को ब्रम्हचर्य कहा जाता है। ब्रम्हचर्य का अर्थ है, सबसे विशाल ध्येय, परमेश्वर का साक्षात्कार करना।२ उन्होने कहा, ब्रम्हचर्य वस्तुत 'हमारे आचार–विचार की व्यापकता का ही नाम है। हमारी जीवनचर्या जब लौकिक स्तरों को पार कर उत्तरोत्तर गति से ईश्वर की ओर उन्मुख होती जाती है तो वह ब्रम्हचरण होती है और ऐसी जीवन पद्धती ब्रम्हचर्य कहलाती है। विनोबा इसे स्पष्ट करते हुए कहते है ब्रम्ह का अर्थ है कोई बृहत कल्पना। कोई मनुष्य अपने बच्चे की सेवा परमात्म स्वरूप करे और चाहे कि उसका लाडला सत्पुरूष निकले तो वह पुत्र ही उसका ब्रम्ह बन जाता है। उसके लिए बच्चे के निमित्त से ब्रम्हचर्य का पालन सरल होगा। ब्रम्हचर्य के विभिन्न स्वरूपो का वर्णन विनोबा जीवन साधना के विभिन्न सोपानो के रूप मे करते है। हिंदुस्थान की दीन जनता की सेवा का ध्येय रखे, तो वह सेवा ही उसका ब्रम्ह है। उसके लिए वह जो करेगा, वही ब्रम्हचर्य है, संक्षेप में नैष्ठिक ब्रम्हचर्य पालनेवाले की आँखो मे विशाल कल्पना होनी चाहिए। तभी वह सरल होता है। ब्रम्हचर्य को मैं विशाल ध्येयवाद और तदर्थ संयमाचरण कहता हूँ। विनोबा के अनुसार किसी भी विशाल ध्येय के लिए ब्रम्हचर्य की साधना की जा सकती है। जैसे भीष्म ने अपने पिता के लिए ब्रम्हचर्य की प्रतिज्ञा की थी और

उसे जीवन भर अच्छी तरह निभाया। इसी तरह गांधीजी ने भी समाज की सेवा के लिए ब्रम्हचर्य का आरम्भ किया। वह भी अपने में एक विशाल ध्येय है।

विनोबा के ब्रम्हचर्य संबंधी विचार

आचार्य विनोबा भावे भारतीय चिंतनधारा के एक महत्त्वपूर्ण विचारक है। भारतीय आषग्रंथो के साथ साथ विश्व जीवन के बाकी एवं धर्म–सम्प्रदायों तथा जीवन–पद्धतीयों, विचार पद्धतीयों का गहन अध्ययन एवं अवगाहन किया है और अपनी प्रज्ञा–दृष्टि से समसामायिक जीवनमार्ग के उपस्कारक तत्त्व के रूप में उन्हे विश्लेषीत–संश्लेषित किया है। विनोबा की वैचारिक स्थापनाओं का अध्ययन स्वयं के एक विरल बौद्धिक व्यायाम है। विनोबा ने जीवन–विषयक तथा समाज व्यवस्था के हर अंग पर अपने विचार रखे है। उन्ही में से एक महत्त्वपूर्ण विचार है ब्रम्हचर्य।

विनोबा के विचारों में ब्रम्हचर्य का क्षेत्र काफी व्यापक है। विनोबा के शब्दों में, ब्रम्हचर्य में बहुत बडी साधना आवश्यक है। केवल एक ही इंद्रिय का निग्रह पाना मत उसका अर्थ मान लिया जाय तो खतरा पैदा होगा। उसका अर्थ है सब इंद्रियों पर काबू पाना। इसके लिए जीवन की छोटी–छोटी बातों मे भी नियमन होना चाहिए। खाना, पीना, बोलना, बैठना, सोना आदि सभी विषयों में नियमन चाहिए।२ अध्यात्मिक साधना के विभाग मे अब तक पुरूषो का अधिकार रहा है। विनोबा इसमें महिलाओं के लिए भी खुला रखना चाहते थे। मानव जाति की आध्यात्मिक उन्नती में महिलाओं की भागीदारी को वे काफी महत्त्वपूर्ण मानते थे। ब्रम्हचर्य के माध्यम से ब्रम्हविद्या में पारंगत बुद्ध, शंकराचार्य, ईसा मसीह जैसे महानायकों की भांति विनोबा महिलाओं से भी इस श्रेणी में आने की अपेक्षा रखते है। विनोबाजी कहते है, मेरी बहुत इच्छा है की, जवान लडके–लडकियाँ खास करके लडकियाँ ब्रम्हविद्या के दर्शन के लिए आगे आएँ। ब्रम्हविद्या में स्त्री–पुरूष भेद नही है, वह विद्या स्त्री–पुरूष भेदों को मिटाती है। फिर भी अभी मैं इस काम के लिए बहनों की और आशा लगाए बैठा हूँ। अभी हमारे समाज के उत्थान के लिए ऐसी महिलाओं की नितांत अनिवार्यता है। जिनका जीवनही ब्रम्हविद्यामय बना हो।३

आध्यात्मिक रूप से सशक्त महिलाओं की शक्ती का उल्लेख करते हुए वे कहते है, 'वैदिक काल में बडी ही ज्ञानवती होती थी। एक प्रसंग है याज्ञवक्ल्य की सभा मे बहस चल रही थी। गार्गी उठ खडी हुई और उसने याज्ञवक्ल्य से कहा जैसे काशी या विदेह का अन्तीम वीर बाण मारता है, वैसेही मैं तुझे प्रश्नरूपी बाण मारती हूँ। तुम अपनी छाती सामने करो, मैं अपने प्रश्नो से ताडन करूँगी। उसने दो सवाल किए। याज्ञवल्क्य ने उन प्रश्नों के जवाब दिए। तब गार्गी ने हिम्मत के साथ पंडितो से कहा, पण्डितो, अब याज्ञवक्ल्य से चर्चा मत करो, इसे नमस्कार करो, क्योंकी इन सवालो से कठीण सवाल और हो नही सकते। गार्गी किसी वीर के समान खडी होकर हिम्मत के साथ कहती है कि, मुझसे कठीण सवाल कौन पूछेगा! वह वेद और उपनिषदों का जमाना था।४ गार्गी के उदाहरण से विनोबा समाज के महिलाओं को कहना चाहते है, की महिलाओं ने ज्ञान के क्षेत्र में पुरूषो से आगे निकलकर आना चाहिए। तभी वह समाज में विरक्त प्रवेश कर सकती है। तभी वह ऐसा नया शास्त्र लिख सकेगी। जो समाज में अब तक पुरूषो ने अपने हित में ही लिखा है, उसे बदल कर अपने हित में लिखकर एक नए समाज का निर्माण कर सकेगी। लेकिन विनोबा इसके साथ यह भी कहते है कि, यह वही स्त्री कर सकेगी जो वैराग्यशील है, शंकराचार्य के समान ज्ञानी है, ब्रम्हवादिनी है। वही महिला आत्मशक्ति के बल पर समाज में अपना स्थान निश्तिच कर सकेगी।५ विनोबा ने अपने सैद्धांतिक विचारों को व्यावहारिकता मे लाने के लिए पवनार स्थित ब्रम्हविद्या मंदिर की स्थापना की। यह आश्रम स्त्री जागरण का केंद्र बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्हे स्त्रियों को ब्रम्हविद्या में पारंगत होना अनिवार्य लगता था। विनोबाजी कहते है की, स्त्रिया ब्रम्हचरिणी होगी, शास्त्रकार होगी, समूहरूपेण काम करेगी, तभी समाज मे चित्र बदलेगा।६ पुरूष और स्त्री दोनो के मेल से समाज का निर्माण होता है। संतुलित सामाजिक जीवन के विकास के लिए स्त्री–पुरूष संबधो में संतुलन अनिवार्य है। किन्तू अनेक कारणों से भारतीय समाज से भारतीय समाज में पुरूष वर्ग की प्रमुखता रही है, इसे बदलकर स्त्रियों की समुचित भागीदारी और प्रतिष्ठामूलक समाज व्यवस्था के लिए वे कहते है ,आज समाज में पुरूषो की ही सत्ता अधिक है। वजह जिन्होने स्त्रियों के लिए कार्य किया। कृष्ण भगवान, महावीर, स्वामी, गांधीजी, दयानंद सरस्वती आदि सब के सब पुरूष है, इसलिए वे ज्यादा कुछ नही कर सके। यह कार्य अथवा काम महिलाओं को स्वयं करना होगा, तभी भलीभाँती हो सकेगा। अनुभव का एक सिद्धांत है कि प्राणी का उद्धार प्राणी के आत्मबल से ही होता है। भगवान की मदद उसी को मिलती है जो स्वयं प्रयासरत रहता है।७ विनोबा के इस विचार को और बल देने में रिचर्ड कार्वर सहायता करते है, जो की कॉवरडेल संगठन हे प्रबन्ध निर्देशक थे। उन्होने ने बताया है कि सशक्तिकरण मे व्यक्ति स्वयं अपने लिए कार्य करने के सर्व श्रेष्ठ तरिके की खोज करता है। वह उन रास्तों पर नही चलता, जो लोगों ने उसे बताये है। अर्थात व्यक्तिद्वारा स्वयं अपनी सहायता करना ही सशक्तिकरण माना जाता है।८ आदर्श समाज व्यवस्था के लिए विनोबा महिलाओं को ब्रम्हविद्या मे दीक्षित होना आवश्यक मानते है। ब्रम्हविद्या मे स्त्री–पुरूष भेद नही है, वह विद्या स्त्री–पुरूष भेदों को मिटाती है। अभी हमारे समाज के उत्थान के लिए ऐसी महिलाओं की बहूत जरूरत है, जिनका जीवन ही ब्रम्हविद्यामय बना हो।९ परिवार नियोजन के संदर्भ मे विनोबा के विचार बडे क्रांतिकारी है। वे कहते है, परिवार नियोजन के कृत्रिम उपायों की बात बहनो पर दया करने की दृष्टी से कि जाती है। इसके मायने यह है की उनपर आक्रमण तो जारी ही रहेगा। इस तरह के आक्रमण से बहने लाचारी से वश हो यह ठिक नही है। ऐसे आक्रमण को रोकने की ताकत बहनो में आनी चाहिए इससे गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठा बढेगी। यह खयाल गलत है कि पत्नी को हमेशा पति के वश में होना ही चाहिए। स्त्रियो मे 'ना' कहने की भी हिम्मत आनी चाहिए। आज स्त्रियों की शक्ति का जिस प्रकार ज्हास हो रहा है, यह बडी दुखदायक बात है। कृत्रिम उपायो से परिवार नियोजन में स्त्री पर जो दया

दिखायी जा रही है उसमे वे समाज में स्त्री पर होने वाली हिंसा का उग्र स्वरूप ही मानते है। अहिंसक समाज निर्माण के लिए यह बहुत बडी बाधा समझते थे।

गांधीजी के ब्रम्हचर्य संबंधी विचार

मुझे ऐसा लगता है कि विनोबा और गांधी को अलग करके देखना सभंव नही लगता। विनोबा कहते है कि गांधी ने उनको गढा है, उनके चरणों मे बैठकर ही वे असभ्य मनूष्य से सेवक बने है। बापू के साथ बैठकर ही उन्हे सेवा की लगन लगी है। गांधी और विनोबा सेवा को भगवान की पूजा का साधन और जनता को अपना स्वामी मानते थे। गांधी विनोबा को अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी मानते थे। विनोबा ने ब्रम्हचर्य का प्रथम पाठ गांधी से सिखा है। गांधी के मन पर हिंदू धर्म के गहरे संस्कार थे। हिंदू धर्म में ब्रम्हचर्य को लेकर जो धारणाएँ है उनका उन पर गहरा असर पडा। हिंदू धर्मग्रंथो और भारतीय परंपराओ के लिए गांधी के मन में आदरभाव था। पर धर्मग्रंथो या परंपराओ की श्रेष्ठता को समग्र रूप से उन्होने कभी स्वीकार नही किया। परिणामस्वरूप गांधी अपने समय मे सामाजिक व्यवस्था के कुछ कुप्रथाओ के खिलाफ थे। ब्रम्हचर्य को लेकर गलत धारणाओं के गांधी खिलाफ थे। जैसे पुराने लोगोने ब्रम्हचर्य का अर्थ स्त्री से दूर रहना और स्त्री से डरना यह माना था। गांधी ऐसे विचारों को अविवेकी मानते थे।

ब्रम्हचर्य में प्रचंड शक्ति होती है ऐसे गांधी मानते है। तथा ब्रम्हचर्य का पालन आसान नही होता है ये भी वे कहते है। उनका मानना है कि शारिरीक संयम ही ब्रम्हयर्च की शुरूवात है तथा शुद्ध ब्रम्हचर्य में कभी विचारों की मलिनता नही होनी चाहिए। संपूर्ण ब्रम्हचर्य के सपने मे भी विकारी विचार नही आने चाहिए। जब तक विकारी सपने आते है। तब तक ब्रम्हचर्य अधुरा है ऐसा समझना चाहिए।११ गांधीजी ने समाज में फैली उन कुरितीयों के विषय में अपने विचार व्यक्त किये जो कि स्त्रियों के विकास के मार्ग को अवरूद्ध करती है। वे स्त्रियो के लिए सामाजिक जीवन में पुरूषो के समान महत्त्व अवसर और अधिकार के हिमायती है। सामाजिक रूढीयों की शिकार स्त्रियों को न्यायपूर्ण तथा विवेक सम्मत स्थान मिले इसके लिए वे जोरदार वकालत करते है। वे स्त्री–पूरूष के बीच समानता के लिए कोई समझौता नही करना चाहते। वे हमेशा कहते थे, मै स्त्रियों के अधिकारों के संबंध मे कोई समझौता करने को तैयार नही हूँ। मेरी राय मे स्त्रियों पर कोई भी ऐसी कानूनी पाबंधी नही लगायाी जानी चाहिए। जो पुरूषो पर भी न लागू होती है। में लडको और लडकियों के साथ पूर्ण समानता का पक्षपाती हूँ।१२ गांधी समाज की ऐसी ही एक कुप्रथा के भी खिलाफ है। जिसमें स्त्रियों को पुरूषों से अलग रखा गया और वह है ब्रम्हचर्य का अधिकार। गांधी समाज में स्थापित लिंगभेद की निंदा करते है। उसी प्रकार वे ब्रम्हचर्य मे स्त्री –पुरूष भेद नही मानते है। गांधी ब्रम्हचर्य के बारे में कहते है,ब्रम्हचर्य का पूरा अर्थ तो ब्रम्ह की खोज है। सर्वव्यापी है और इसलिए अपनी आत्मा में डूबकी लगाने और उसे पहचानने से उसकी खोज हो सकती है। यह साक्षात्कार इंद्रियों के संपूर्ण संयम के बिना असंभव है। इस प्रकार ब्रम्हचर्य का अर्थ है सब इद्रियों का हर समय और हर जगह, मन, वचन और कर्म से संयम।१३ गांधी के अनुसार,स्त्रियों को विवाह करना ही चाहिए, यह धारणा भ्रम है। उसे भी यावज्जीवन ब्रम्हचर्य पालन का अधिकार है।१४ विवाह एक कुदरती चीज है और इसे किसी भी तरह नीचे गिरानेवाली बात समझना गलत है, ऐसा गांधी मानते है, इस संदर्भ में गांधीजी समाज मे एक आदर्श स्थिती की कल्पना करते है, तथा इसे पवित्र संस्कार मानकर इसे शारीरिक विषय भोग तक सीमित न मानकर एक आध्यात्मिक दर्जा प्रदान करते है। शादी तथा प्रेम विवाह को लेकर गांधी अपने विचार प्रस्तुत करते है, विवाह के पहले दोनो उचित मर्यादा मे रहकर ब्रम्हचर्य का पालन करे।१५ गांधी संतति नियमन को आवश्यक मानते है। परंतू इसेके लिए कृत्रिम उपायों का सहारा लिए जाने के बाजाय आंतसयंम या ब्रम्हचर्य का पालन श्रेयस्कर मानते है। उनकी दृष्टि से स्त्री–पुरूष सहवास संतान प्राप्ति के लिए ही होता है। गांधीजी कहते है, संतान पैदा होने के बाद स्त्री और पुरूष ने ब्रम्हचर्य का पालन कर के समाज सेवा में जूट जाना चाहिए।१६ आगे गांधीजी बाताते है की, संतानोत्पत्ति की इच्छा न हो, फिर भी पति–पत्नी भोग करते है तो उसे पाप समझना चाहिए। बिना विचारो संतान बढाते जाना या संताना की इच्छा करते जाना जडता का लक्षण है। संततिवृद्धि को रोकने का एक ही धर्ममुक्त मार्ग है वह ब्रम्हचर्य है। संतति नियमन के कृत्रिम उपाय धर्म तथा नीति के विरूद्ध और परिणाम विनाश की और ले जानेवाले है। इससे समाज का सब प्रकार से अधपात होता है।१७ गांधीजी के जीवन मे ब्रम्हचर्य को अपार महत्त्व था। गांधीजी के जीवन में ब्रम्हचर्य को बहोत महत्व था। ब्रम्हचर्य के बीना जीवन की सफलता उन्हे नजर नही आती थी। उनके अनुसार,पति अगर ब्रम्हचर्यव्रत लेने के लिए इच्छूक है और पत्नी इसे लेने के लिए तैयार नही है ऐसे स्थिति मे पत्नी सत्याग्रह के बल से इसे कठिनाई को सहन कर ले और जोर दुख पडे उसे बर्दाश्त कर ले। पति के ऐसा निश्चय करने पर भी तीव्र भोगेच्छा रखनेवाली स्त्री की स्थिती कठीन हो जाती है, क्योकिं दोनो स्थितीयों में कानून और लोकमत पत्नी के प्रतिकूल है। इसलिए ऐसी स्थिति मे पति ने पत्नी के लिए उसके योग्य पुरूष की तलाश करके धर्म विवाह कर देना चाहिए। इस प्रकार कानून में सुधार करने का रास्ता भी वह आसान कर देगा। १८

विनोबा के विचार गांधी के विचारों से उदात्त और व्यापक दिखाई देते है। विनोबा का ब्रम्हचर्य शारिरीक संबंधो के परे है। शारीरिक संबंध सिर्फ एक हिस्सा है। विशाल ध्येय के साथ अपना जीवन सेवा में बहा देना ब्रम्ह को पाने जैसा है। उसमें माँ अपने बेटे की सेवा बगैर स्वार्थ बुद्धी से करती है उसे भी विनोबा ब्रम्हचर्य मानते है। गांधीजी ब्रम्हचर्य को शारिरीक संबंधो के दायरे मे दिखते है। परिवार नियोजन के लिए कृत्रिम उपायो का उन्होने विरोध जताया है। और उसमें समाज का अधपात कहा है। गांधी के इन विचारों में लैंगिक हिंसा का मुद्दा समाने आता है जो समाज मे आज संतति निरोध के नए उपायों के कारण आसान हुआ है। सेक्स स्कडल जैसे समस्या का जन्म हुआ है। ऐसी बात नही है लैंगिक हिंसा गांधी के समय नही होती थी। तब भी परिवारों के अंदर,

समाज में होती थी परंतू अवैध संतति का डर जो समाज मान्य नही था और आज भी नही है। उसे के कारण इसका स्वरूप इतना भयंकर नही था जो आज दिखाई देता है। कृत्रिम उपायों के कारण संतति का डर नही रहा। लेकीन दुसरी बात यह भी है, जिनको परिवार में और बच्चे नही चाहिए उनके लिए परिवार नियोजन के उपायों के साथ संतति प्राप्ति बंद करके अपना समय समाज की सेवा में लगा सकते। गांधी समझते है कि वासना के बहाव में समाज की सेवा प्रभावशाली नही हो सकती।

गांधी पति के ब्रम्हचर्य के निर्णय मे पत्नी के सहमती की जरूरत महसूस नही करते है। अपने जीवन में भी उन्होने कस्तुरबा के सहमती के विरुध्द ही ब्रम्हचर्य का निर्णय लिया था। गांधीजी के इन विचारों मे एक पितृसत्तात्मक विचारधारा का प्रभाव साफ दिखाई देता है। उसके बाद वे कहते है कि, अगर पत्नी की तीव्र भोगेच्छा हो तो उसके लिए धर्म विवाह का प्रयोजन रखा जाए । यहॉ भी गांधी ने उस समय के सामाजिक परिस्थिति का विचार नही किया जो की एक परित्यक्ता स्त्री के लिए दुसरा विवाह करना समाज मान्यं नही था। अगर वह स्त्री इस धर्म विवाह के लिए तैयार ना हो या दुसरा प्रश्न यह भी उठता है कि उस स्त्री के बच्चे हो तो उन बच्चो के पालन–पोषाण की जिम्मेदारी का क्या प्रयोजन होगा। ? ऐसे अनेक सवाल उस स्त्री के सामने आते है। समाज के तरफ से व्यभिचारी का आरोप लगने का भी डर उसे सताता है। भारतीय समाज की परंपरा स्त्री के सृजनशीलता, उसके नैतिकता में ही बताई गई है। और उसके पातिव्रत्य धर्म मे ही उसके जीवन की सफलता कही गयी है। ऐसे सामाजिक तत्वों को गांधी भी मानते है। तो ऐसी परंपरा को लेकर गांधी स्त्री के साथ कितना न्याय कर पा रहे है। यह सोचने की बात है। गांधी खुद ही अपने जीवन में ब्रम्हचर्य के प्रयोग करते रहे है ।१६

विनोबा और गांधी यह दोनो समाज के अद्वितीय व्यक्ति है, जिन्होने समाज के सेवा में अपना संपूर्ण जीवन दाव पर लगा दिया था। समाज का विकास वे समानता के साथ ही करतें है। स्त्रियों के प्रति इन दोनों का एक ही दृष्टीकोन नजर आता है। दुनिया की आधी आबादी जबतक अधिकारहीन रहेगी तबतक दुनिया का सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास नही हो सकता। यह उनका स्पष्ट विवेचन है। अधिकारो और कानूनों को बनाने से वह नही आएगा बल्कि उसे अपने आत्मशक्ति के बल पर हासिल करना होगा उसपर वह अटूट है।

विनोबा और गांधी समाज के निर्माण तथा सुसंस्कृत समाज के विकास के लिए ब्रम्हचर्य का आधार लेते है। लेकिन विनोबा का ब्रम्हचर्य गांधी के ब्रम्हचर्य से अलग दिखाई देता है। गांधी ब्रम्हचर्य को शारिरीक संबधों के दायरे मे देखते है। जब की विनोबा के लिए वह एक ब्रम्हचर्य का हिस्सा है। ब्रम्ह का अर्थ ही वे एक विशाल कल्पना, ध्येय कहते है। समाज की सेवा के लिए वासना से दूर रहने की बात भी विनोबा कहते है। ब्रम्हचर्य के बीना एकाग्रचित्त से समाज की सेवा नही कर सकते है यह उनका मानना है। बिना मतलब पारिवारिक समस्याओं में मनुष्य उलझा रहेगा तो निस्वार्थ बुध्दी से समाज की सेवा नही कर पाएगा। इस पर वे जोर देते है। उनका मानना है की समाज मे ब्रम्हवादिनी स्त्रिया होनी चाहिए, जो ज्ञानी शास्त्रकार हो, वही स्त्रिया समाज को बदल सकती है। विनोबा तथा गांधी स्त्रियों को समाज निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान देते है। विनोबा के ब्रम्हचर्य के विचार व्यापक सामाजिक और आध्यात्मिक लगते है। गांधी के विचार व्यापक लेकिन संकुचित समाजिक और सांस्कृतिक दिखायी पडते है। गांधी और विनोबा दोनो वर्तमान भारतके सामाजिक, और सांस्कृतिक आंदोलनो के लिए प्रासंगिक है। ये दोनो समाज के बारे मे सोचते है, सामाजिक व्यवस्था कुप्रथाओ से टकराते है, समाज के प्रति विशेष दृष्टीकोन अपनाते है और समाज को बदलना चाहते है। इनका एक साथ अध्ययन किया जाए तो वह दोनो ही प्रासंगिक लगते है। पर इनकी प्रासंगिकता एक जैसी नहीं है। लेकीन समाज के प्रति आस्था एक जैसी है। आज के नेतागण जीस प्रकार का आचरण करते, व्यवहार करते, हाल ही मे आप दिल्ली दल के एक मंत्रीगण सेक्स स्केडंल मे पकडा गया, उसके राजनीतिक जीवन पर बदनूमा धब्बा लगा। काश उन्होने विनोबा एवं गांधीजी के ब्रम्हचर्य विचारों का अमंल किया होता तो आज उसका हस्त्र ऐसा नही होता। ब्रम्हचर्य इन्सान को मानवता, सहनशीलता, एक मानसिक स्थिरता प्रधान करता है, यही सही विनोबा, गांधी के ब्रम्हचर्य की सही प्रासंगिकता है। साथ ही भारतके आज युवक–युवती यदि विनोबा एवं गांधीजी के ब्रम्हचर्य का पालन करते है तो अनैतिकता जैसी घटनाएँ घटित नही होगा। ना ही राजनीतिक कुरीतीयॉ बढेगी यही ब्रम्हचर्य की प्रासंगिक है।

निष्कर्ष

1. आधुनिक भारतवर्ष के निर्माण में विनोबा एवं गांधीजी का योगदान अहम रहा है।
2. विनोबा ने ब्रम्हचर्य को एक आधारभूत–आध्यात्मिक तत्व माना।
3. विनोबा मानव जाती की आध्यात्मिक उन्नति मे स्त्रियों की भागीदारी महत्वपूर्ण मानते है।
4. गांधीजी ब्रम्हचर्य को सब इंद्रियों का हर समय और हर जगह, मन वचन और कर्म से संयमवाला तत्व मानते है।
5. गांधीजी का ब्रम्हचर्य आज के युवक–युवती को नैतिकता प्रदान करता है।
6. आज समाज में गलत, अनैतिक घटित हो रहा है, उस पर गांधीजी का ब्रम्हचर्य रामबाण औषध सिध्द हो सकता है।
7. आज के नेतागण, मंत्रीगण, एवं अनुयायी लोगों को विनोबा गांधी का ब्रम्हचर्य आचरण मे लाने योग्य है। बल्कि वर्तमान भारतके सभी लोगो ने विनोबा और गांधी के ब्रम्हचर्य को अंमल मे लाया तो अनुचित घटनाओं मे कमी आ सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *विनोबा आध्यात्मक तत्वसुधा, परंधाम प्रकाशन पवनार पृ. ४७–४८.*
2. *विनोबा – स्त्रीशक्ति जागरण, रणजित देसाई, परधाम पवनार वर्धा–पृ. ३४.*

3. विनोबा– स्त्रीशक्ति जागरण, रणजित देसाई, परधाम पवनार वर्धा–पृ. ३६.
4. उपरोक्त – पृष्ठ क्र. ३४.
5. उपरोक्त – पृष्ठ क्र.१५, १६, ३६.
6. विनोबा, ब्रम्हविद्या मंदिर, रणजित देसाई, परधांम प्रकाशन, ग्रामसेवा मंडल, पवनार वर्धा – पृ.४६.
7. विनोबा, स्त्री–शक्ति जागरण रणजित देसाई, परंधाम प्रकाशन, ग्रामसेवा मंडळ, पवनार वर्धा पृ.८८.
8. नाटानी प्रकाश गौतमज्योती लिंगएवं समाज, रिसर्च पब्लिकेशन नई दिल्ली पृ. ४६.
9. विनोबा– स्त्री शक्ति, परधाम प्रकाशन, वर्धा पृ. ३७–३२.
10. विनोबा, स्त्री शक्ति, जागरण रणजित देसाई परधाम प्रकाशन ग्राम सेवा मंडल वर्धा – पृष्ठ ६०–६१.
11. गांधी मोहनदास करमचंद – संक्षिप्त आत्मकथा, संक्षिप्तकार भारतकुमारप्पा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद पृ. १४८.
12. मोहनराव – यु. एस. संपादक महात्मा गांधी का संदेश प्रकाशन विभाग सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारतसरकार दिल्ली पृ. १०५.
13. गांधीजी, सत्यं ही आखिर है नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद पृ.१११.
14. मशरूवाला किशोरलाल, गांधी विचार दोहन साहित्य, मण्डल प्रकाशन, एन ७७ पहली मंजिल कॅनाट सर्कस नई दिल्ली पृ.४०.
15. उपरोक्त – पृ.४४.
16. उपरोक्त – पृ.४५.
17. उपरोक्त – पृ.४६.
18. उपरोक्त – पृ.४६,. ४७
19. शुक्ल – सागर, दयानंद– महात्मा गांधी – सेक्स और ब्रम्हचर्य दयानंद के प्रयोग, वाणी प्रकाशन २१ – ए , दरियागंज, नई दिल्ली पृ.२१